>

Title: Regarding delay in implementation of Baksauti dam project on Aparsakri river in Nawada Parliamentary Constituency of Bihar.

डॉ. भोला सिंह (नवादा): सभापति महोदय, मां, माटी और मानुष मनुष्य के ही चेतन आत्मा के चिरंतन स्पंदन हैं और यही साहित्य का मानसरोवर का अंश भी है तथा यही धार्मिक अर्चना भी है और यही ज्ञान का आधार भी है। मैं बिहार के नवादा क्षेत्र से आता हूं। यह बिहार का क्रॉनिक सुखाड़ का जिला है। नवादा विडंबनाओं का जिला है। यहां नदियां हैं लेकिन पानी नहीं है। नदियां प्यासी हैं। बरसात में जन्म लेती हैं, युवा होती हैं, और तीन महीने में मर जाती हैं। बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री डॉ. श्री कृष्ण सिंह जी ने इस अपर सकरी नदी में डैम बनाने का कदम उठाया। उस दिशा में उन्होंने कुछ कार्यवाही भी की और सफलता भी पाई। उनके देहावसान के बाद 1983 में स्व. चन्द्रशेखर सिंह के कार्यकाल में फिर शिलान्यास हुआ लेकिन कार्यान्वयन नहीं हुआ। बिहार सरकार ने पिछले वर्ष कैबिनेट बैठक में बकसौती परियोजना 50 करोड़ की योजना बनाई, डैम बनाकर बिजली का उत्पादन, 28,000 एकड़ जमीन का प्रतिबंध होता। इससे भारत सरकार के गंगा फ्लड कंट्रोल बोर्ड को तकनीकी प्रशासनिक स्वीकृति के लिए भेजा है। मैं बहुत पीड़ा से इस बात को कहना चाहता हूं, क्या सदन सोचरन सदन है, जनता की आशा, अपेक्षा, आकांक्षाओं की आकृति है। मैं चार वर्षों से सिर पटक रहा हूं, छाती पीट रहा हूं। सच चिल्लाता है। मैं आपके माध्यम से पुनः सरकार से आग्रह करना चाहते हैं। नवादा बहुत कुछ भोग चुका है, 22,00,000 आज भी विकास के क्षेत्र में बहुत पिछड़े हुए हैं। चाहे केंद्र सरकार हो या राज्य सरकार हो, मेरा कहना है कि नवादा इनके दामन पर गहरा दाग है। मैं आपके माध्यम से केंद्र सरकार से आग्रह करता हूं कि हमारी पीड़ा के आंसू को पोंछिए। अगर ऐसा केंद्र सरकार ने नहीं किया और कहीं सकारात्मक स्थिति उत्पन्न नहीं हुई तो ऐसे ही हादसे होंगे। मैं प्रार्थना करता हूं कि मानव इतिहास में इस तरह से इतिहास कलंकित न हो। मैं यही प्रार्थना करता हूं और केंद्र सरकार के बारे में कहना चाहता हूं - हे ईश्वर इन्हें सद्बुद्धि दे कि ये नवादा की स्थिति की तरफ ध्यान देकर इसका कल्याण करें।